कक्षा 10 · इतिहास

यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

अध्याय 1

MARUSHALA

भरत चौधरी और वनिता कुमारी ने बनाया · marushala.com

आप कौन हैं?

आपको कैसे पता कि आप भारतीय हैं? **कौन-सी चीज़ें आपको भारतीय बनाती हैं?**

अध्याय की सबसे पहली बात

दो सौ साल पहले यूरोप ऐसा नहीं था

- आज हर जगह **देश** हैं, हर देश की **अपनी सरकार, अपना झंडा और अपनी सीमा** है
- **लेकिन दो सौ साल पहले यूरोप में ऐसे देश थे ही नहीं**
- वहाँ **राजाओं के राज्य** थे, जिनमें **अलग-अलग भाषा बोलने वाले लोग** रहते थे
- लोगों की पहचान **उनके राजा से** होती थी, **उनके देश से नहीं**
- यह अध्याय बताता है कि **राजाओं के राज्य कैसे देशों में बदल गए**

इसी बदलाव की भावना को **राष्ट्रवाद** कहते हैं

अध्याय की सबसे ज़रूरी बात

साझेपन की यह भावना **अनंत काल से नहीं थी**; यह **संघर्षों और नेताओं तथा आम लोगों की सरगर्मियों से निर्मित हुई थी।**

पाठ्यपुस्तक, पृष्ठ 4

इसका मतलब है — **राष्ट्र अपने आप नहीं बन जाते, उन्हें लोग बनाते हैं**

1

शुरुआत के दो स्रोत

सॉर्र्यू का चित्र; रेनन का प्रश्न

सॉर्र्यू का चित्र, 1848

- फ़्रांसीसी कलाकार **फ़्रेडरिक सॉर्र्यू** ने **1848 में चार चित्रों की शृंखला** बनाई
- उसने **‘जनतांत्रिक और सामाजिक गणतंत्रों’** से बने संसार का सपना दिखाया
- लोग **एक लंबी क़तार** में **स्वतंत्रता की प्रतिमा** की वंदना करते हुए चल रहे हैं
- स्वतंत्रता एक **महिला** है — एक हाथ में **ज्ञानोदय की मशाल**, दूसरे में **मनुष्य के अधिकारों का घोषणापत्र**
- जुलूस का नेतृत्व **अमेरिका और स्विट्ज़रलैंड** कर रहे हैं, क्योंकि वे तब तक **राष्ट्र-राज्य बन चुके थे**
- ज़मीन पर **निरंकुश संस्थानों के टूटे हुए अवशेष** बिखरे हैं

यह चित्र एक **कल्पनादर्शी (युटोपिया)** है — यानी ऐसा सपना **जिसका साकार होना लगभग असंभव है**

राष्ट्र क्या है?

एक राष्ट्र **लंबे प्रयासों, त्याग और निष्ठा का चरम बिंदु** होता है... राष्ट्र एक **बड़ी और व्यापक एकता** है... **उसका अस्तित्व रोज़ जनमत-संग्रह है।**

अर्न्स्ट रेनन (1823–92), सॉर्बोन विश्वविद्यालय, 1882

रेनन के अनुसार राष्ट्र **समान भाषा, नस्ल, धर्म या क्षेत्र से नहीं बनता**

2

फ़्रांसीसी क्रांति

1789 — राष्ट्रवाद की पहली अभिव्यक्ति

फ़्रांसीसी क्रांति से क्या बदला

- **राष्ट्रवाद की पहली स्पष्ट अभिव्यक्ति 1789 में फ़्रांसीसी क्रांति** के साथ हुई
- 1789 से पहले फ़्रांस पर **एक निरंकुश राजा** का शासन था
- क्रांति से **प्रभुसत्ता राजा के हाथ से निकलकर नागरिकों के समूह** के हाथ में चली गई
- क्रांति ने घोषणा की कि **अब लोगों द्वारा राष्ट्र का गठन होगा और वे ही उसकी नियति तय करेंगे**

प्रभुसत्ता = सबसे ऊपर वाली ताक़त, जिसके ऊपर कोई और न हो

यह सीधे 4 अंक का प्रश्न है

सामूहिक पहचान बनाने के आठ क़दम

क़दम	इससे क्या हुआ
पितृभूमि और नागरिक के विचार	लोगों को लगा वे **एक संयुक्त समुदाय** हैं
नया झंडा — **तिरंगा**	उसने **राजध्वज की जगह** ली
नेशनल एसेंबली का गठन	जनता के चुने प्रतिनिधियों की सभा बनी
केंद्रीय प्रशासनिक व्यवस्था	सभी नागरिकों के लिए **समान क़ानून**
आंतरिक शुल्क समाप्त, एकसमान माप-तौल	पूरे देश में व्यापार आसान
क्षेत्रीय बोलियाँ हतोत्साहित	**पेरिस की फ़्रेंच साझा भाषा बनी**

हर क़दम ने लोगों के बीच का **फ़र्क़ कम किया** और **एकरूपता बढ़ाई**

पृष्ठ 5–7

नेपोलियन — दो अलग चेहरे

जो नुक़सान किया

- फ़्रांस में **राजतंत्र वापस लाया**
- वहाँ **प्रजातंत्र को नष्ट कर दिया**
- जीते इलाक़ों में **बढ़े हुए कर**
- **सेंसरशिप** और **जबरन सैनिक भर्ती**

जो फ़ायदा किया

- **1804 की नागरिक संहिता**
- **जन्म पर आधारित विशेषाधिकार समाप्त**
- **सामंती व्यवस्था खत्म**; किसानों को **भू-दासत्व से मुक्ति**
- **यातायात और संचार** में सुधार

इतिहास में ज़्यादातर लोग **दोनों तरफ़** होते हैं — इतिहास पढ़ने का मतलब ही दोनों तरफ़ देखना है

3

अठारहवीं सदी का यूरोप

साम्राज्य, वर्ग और नया मध्यवर्ग

उस समय यूरोप कैसा था

- **मध्य अठारहवीं सदी के यूरोप में आज जैसे राष्ट्र-राज्य नहीं थे**
- जर्मनी, इटली और स्विट्ज़रलैंड **राजशाहियों, डचियों और कैंटनों** में बँटे थे
- पूर्वी और मध्य यूरोप **निरंकुश राजतंत्रों** के अधीन था
- वहाँ के लोग **अपने आप को एक सामूहिक पहचान का भागीदार नहीं मानते थे**
- वे **अलग-अलग भाषाएँ** बोलते थे और **विभिन्न जातीय समूहों** के सदस्य थे

हैब्सबर्ग साम्राज्य — टिरॉल में जर्मन, लॉम्बार्डी में इतालवी, हंगरी में मैग्यार, गालीसिया में पोलिश

सबको जोड़ने वाली एक ही चीज़

सम्राट **“इन तरह-तरह के समूहों को आपस में बाँधने वाला तत्व, केवल सम्राट के प्रति सबकी निष्ठा थी।”**

लोग **एक-दूसरे से नहीं, राजा से जुड़े हुए थे** — और यही आगे चलकर बदला

पृष्ठ 8–9

समाज के तीन वर्ग

- **कुलीन वर्ग** — ज़मीन का मालिक, **सबसे प्रभुत्वशाली, पर संख्या में छोटा**; राजनीति में **फ़्रेंच** बोलता था
- **किसान और भूदास** — **जनसंख्या के अधिकांश लोग**; पूर्वी यूरोप में **विशाल जागीरों पर भूदास** खेती करते थे
- **नया मध्यवर्ग** — **उद्योगपति, व्यापारी और सेवा क्षेत्र** के लोग, जो औद्योगीकरण से पैदा हुए
- इंग्लैंड में औद्योगीकरण **अठारहवीं सदी के दूसरे भाग** में शुरू हुआ

“कुलीन विशेषाधिकारों की समाप्ति के बाद शिक्षित और उदारवादी मध्य वर्गों के बीच ही राष्ट्रीय एकता के विचार लोकप्रिय हुए”

4

उदारवाद

तीन अर्थ — राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक

उदारवाद का राजनीतिक अर्थ

- उदारवाद का मतलब था **व्यक्ति के लिए आज़ादी और क़ानून के समक्ष सबकी बराबरी**
- राजनीतिक रूप से यह **सहमति से बनी सरकार** पर ज़ोर देता था
- यह **निरंकुश शासक और पादरीवर्ग के विशेषाधिकारों की समाप्ति** का पक्षधर था
- यह **संविधान और संसदीय प्रतिनिधि सरकार** चाहता था
- उन्नीसवीं सदी के उदारवादी **निजी संपत्ति के स्वामित्व** पर भी बल देते थे

उदारवादी कहते थे “बदलो”, रूढ़िवादी कहते थे “बचाओ”

पर बराबरी सबके लिए नहीं थी

समय	वोट का अधिकार किसे
क्रांतिकारी फ़्रांस	**केवल संपत्तिवान पुरुषों को**
—	**संपत्ति-विहीन पुरुष और सभी महिलाएँ वंचित**
जैकोबिन शासन	**केवल थोड़े समय** के लिए सभी वयस्क पुरुषों को
नेपोलियन की संहिता	**सीमित मताधिकार वापस**; महिलाएँ **पिताओं और पतियों के अधीन**

इसी कारण **पूरी उन्नीसवीं सदी में महिलाओं और ग़रीब पुरुषों को अधिकारों के लिए लड़ना पड़ा**

एक ही ‘ऐले’, चार अलग नाप

शहर	एक ‘ऐले’ कपड़े की लंबाई
फ़्रैंकफ़र्ट	54.7 सेंटीमीटर
मेंज़	55.1 सेंटीमीटर
न्यूरेम्बर्ग	**65.6 सेंटीमीटर**
फ़्राईबर्ग	**53.5 सेंटीमीटर**

और **1833 में हैम्बर्ग से न्यूरेम्बर्ग** जाने वाले व्यापारी को **ग्यारह सीमाशुल्क नाकों** से गुज़रना पड़ता था, हर बार लगभग **5% शुल्क**

इसी समस्या का हल — ज़ॉल्वेराइन

1834 **प्रशा की पहल** पर बना **शुल्क संघ**, जिसमें अधिकांश जर्मन राज्य शामिल हुए। इसने **शुल्क अवरोध समाप्त** किए और **मुद्राओं की संख्या तीस से घटाकर दो** कर दी

> **“एक मुक्त आर्थिक व्यवस्था ही राष्ट्रीय भावनाओं के उत्पन्न होने का एकमात्र ज़रिया है”** — फ़्रेडरिख लिस्ट, 1834

5

रूढ़िवाद और वियना संधि

1815 — पुरानी व्यवस्था लौटाने की कोशिश

नया रूढ़िवाद

- **रूढ़िवाद** वह दर्शन है जो **परंपरा, स्थापित संस्थानों और रिवाज़ों पर ज़ोर** देता है
- वह **तेज़ बदलावों की बजाय क्रमिक विकास** को प्राथमिकता देता है
- रूढ़िवादी **राजतंत्र, चर्च, सामाजिक ऊँच-नीच, संपत्ति और परिवार** को बनाए रखना चाहते थे
- **पर अधिकतर रूढ़िवादी क्रांति से पहले के दौर में वापसी नहीं चाहते थे**
- उन्होंने जान लिया था कि **आधुनिकीकरण राजतंत्र को मज़बूत बनाने में सक्षम है**

पुराने रूढ़िवादी कहते थे **“कुछ मत बदलो”**; नए कहने लगे **“थोड़ा बदलो, ताकि बाक़ी सब वैसा ही रहे”**

मेज़बान — ऑस्ट्रिया का चांसलर ड्यूक मैटरनिख

वियना संधि, 1815 — मुख्य फ़ैसले

क्षेत्र	फ़ैसला
फ़्रांस	**बूबों वंश बहाल**; जीते हुए इलाक़े वापस
फ़्रांस की सीमाओं पर	कई राज्य क़ायम, ताकि **वह फिर विस्तार न कर सके**
उत्तर में	**नीदरलैंड्स** का राज्य, जिसमें बेल्जियम शामिल
ऑस्ट्रिया को	**उत्तरी इटली का नियंत्रण**
रूस को	**पोलैंड का एक हिस्सा**
जर्मन महासंघ	नेपोलियन का बनाया **39 राज्यों वाला महासंघ बरक़रार**

पृष्ठ 11–12

सेंसरशिप और गुप्त संगठन

- 1815 की रूढ़िवादी व्यवस्थाएँ **निरंकुश थीं** और **आलोचना बर्दाश्त नहीं करती थीं**
- सरकारों ने **सेंसरशिप के नियम** बनाए — **अख़बारों, किताबों, नाटकों और गीतों** पर नियंत्रण
- **इसीलिए उदारवादी राष्ट्रवादियों का मुख्य मुद्दा प्रेस की आज़ादी था**
- दमन के भय से अनेक उदारवादी-राष्ट्रवादी **भूमिगत** हो गए
- **गुप्त संगठन** बने, जो क्रांतिकारियों को **प्रशिक्षण** देते और **विचारों का प्रसार** करते थे

चित्र 6 में एक क्लब की दीवार पर लिखा है — **“हमें कब तक सोचने दिया जाएगा?”**

मैटरनिख की सबसे बड़ी चिंता

हमारी सामाजिक व्यवस्था का **सबसे ख़तरनाक दुश्मन**।

मैटरनिख ने ज्युसेपे मेत्सिनी के बारे में कहा

मेत्सिनी — जन्म **1805, जेनोआ**; **कार्बोनारी** का सदस्य; **'यंग इटली' (मारसेई)** और **'यंग यूरोप' (बर्न)** के संस्थापक

6

क्रांतियों का युग

1830–1848 — और संस्कृति की भूमिका

क्रांतियों का युग

1 **1821**
यूनान का स्वतंत्रता संग्राम आरंभ; लॉर्ड बायरन ने धन जुटाया और लड़ने भी गए

2 **1824**
बायरन की**बुख़ार से मृत्यु**

3 **जुलाई 1830**
फ़्रांस में क्रांति; बूबों राजा हटे, **लुई फ़िलिप** आया; **बेल्जियम अलग हुआ**

4 **1831**
रूस के विरुद्ध**पोलिश विद्रोह**, जो कुचल दिया गया

5 **1832**
कुस्तुनतुनिया की संधि — यूनान स्वतंत्र राष्ट्र बना

6 **1845**
सिलेसिया के बुनकरों का विद्रोह

7 **1848**
पेरिस में क्रांति; **18 मई को फ़्रैंकफ़र्ट संसद**

“जब फ़्रांस छींकता है तो बाक़ी यूरोप की सर्दी-ज़ुकाम हो जाता है” — मैटरनिख

संस्कृति ने राष्ट्र बनाने में क्या किया

- **“राष्ट्रवाद का विकास केवल युद्धों और क्षेत्रीय विस्तार से नहीं हुआ”**
- **कला, काव्य, कहानियों-क़िस्सों और संगीत** ने राष्ट्रवादी भावनाओं को गढ़ा
- **रूमानीवाद** ने **तर्क और विज्ञान की जगह भावनाओं और अंतर्दृष्टि** पर ज़ोर दिया
- **योहान गॉटफ़्रीड** — सच्ची जर्मन संस्कृति **आम लोगों (das volk)** में निहित है
- राष्ट्र की सच्ची आत्मा **लोकगीतों, जन-काव्य और लोकनृत्यों** से प्रकट होती है

यह ज़रूरी था क्योंकि **अधिकांश लोग निरक्षर थे** — उन तक संदेश किताब से नहीं, **गीत और कहानी** से पहुँच सकता था

छह साल, गाँव-गाँव, एक विचार

1812 **जैकब और विल्हेल्म ग्रिम** ने **छह साल तक गाँव-गाँव जाकर लोक कथाएँ इकट्ठी कीं** और उनका **पहला संग्रह** प्रकाशित किया। बाद में उन्होंने **33 खंडों में जर्मन भाषा का शब्दकोश** भी बनाया

वे इसे **जर्मन राष्ट्रीय पहचान गढ़ने की व्यापक योजना का हिस्सा** मानते थे

पोलैंड — जब देश मिट गया, पर पहचान बची

- अठारहवीं सदी के अंत में **रूस, प्रशा और ऑस्ट्रिया ने पोलैंड का विभाजन** कर दिया था
- **“यद्यपि पोलैंड अब स्वतंत्र भू-क्षेत्र नहीं था, किंतु संगीत और भाषा के ज़रिये राष्ट्रीय भावना जीवित रखी गई”**
- **कैरोल कुर्पिंस्की** ने **पोलोनेस और माजुरका** जैसे लोकनृत्यों को **राष्ट्रीय प्रतीकों** में बदला
- रूसी क़ब्ज़े के बाद **पोलिश भाषा स्कूलों से हटाकर रूसी जबरन लादी गई**
- 1831 के असफल विद्रोह के बाद लोगों ने **भाषा को हथियार** बनाया — चर्च और धार्मिक शिक्षा में पोलिश चलाई
- **बड़ी संख्या में पादरियों और बिशपों को जेल में डाला गया और साइबेरिया भेजा गया**

राष्ट्र सिर्फ़ ज़मीन नहीं होता — वह भाषा, संगीत और स्मृति में भी ज़िंदा रह सकता है

7

1848

भूख की क्रांति और पढ़े-लिखों की क्रांति

पृष्ठ 15–16

भूख, कठिनाइयाँ और जन विद्रोह

- **1830 का दशक यूरोप में भारी कठिनाइयाँ लेकर आया**
- **जनसंख्या में ज़बरदस्त वृद्धि**; नौकरी ढूँढ़ने वालों की तादाद **रोज़गार से अधिक**
- ग्रामीण आबादी शहरों की **भीड़ से भरी ग़रीब बस्तियों** में रहने लगी
- लघु उत्पादकों को **इंग्लैंड से आयातित सस्ते मशीनी कपड़े** से कड़ी प्रतिस्पर्धा
- जहाँ कुलीन वर्ग सत्ता में था, वहाँ **कृषक सामंती शुल्कों के बोझ तले दबे** थे
- **1848 में खाने-पीने की कमी और बेरोज़गारी से पेरिस के लोग सड़कों पर उतर आए**

राष्ट्रवाद केवल विचारों का आंदोलन नहीं था — **भूख भी लोगों को सड़कों पर लाती थी**

सिलेसिया के बुनकर, 1845

काम के लिए बेताब लोगों का फ़ायदा उठा कर ठेकेदारों ने बनवाए जाने वाले माल की क़ीमतें गिरा दी हैं।

पत्रकार विल्हेम वोल्फ़

बुनकरों ने **ज़्यादा मज़दूरी माँगी**; ठेकेदार **24 घंटे बाद सेना बुलाकर लौटा**; टकराव में **ग्यारह बुनकरों को गोली मार दी गई**

फ़्रैंकफ़र्ट संसद — उम्मीद और असफलता

तथ्य	विवरण
तारीख़ और संख्या	18 मई 1848 · 831 निर्वाचित प्रतिनिधि
स्थान	सेंट पॉल चर्च, फ़्रैंकफ़र्ट
मुख्य काम	जर्मन राष्ट्र के लिए संविधान का प्रारूप; राजा को संसद के अधीन रहना था
असफलता 1	प्रशा के राजा फ़्रेडरीख विल्हेम चतुर्थ ने ताज अस्वीकार किया
असफलता 2	कुलीन वर्ग और सेना का विरोध बढ़ गया
असफलता 3	मध्य वर्गों ने मज़दूरों-कारीगरों की माँगों का विरोध किया और उनका समर्थन खो दिया

अंत में सैनिकों को बुलाया गया और एसेंबली भंग होने पर मजबूर हुई

पृष्ठ 17–18

महिलाओं ने क्या किया — और क्या नहीं मिला

- महिलाओं ने **अपने राजनीतिक संगठन स्थापित किए**
- उन्होंने **अख़बार शुरू किए**
- उन्होंने **राजनीतिक बैठकों और प्रदर्शनों में शिरकत की**
- **इसके बावजूद उन्हें एसेंबली के चुनाव में मताधिकार से वंचित रखा गया**
- **फ़्रैंकफ़र्ट संसद में उन्हें केवल प्रेक्षकों की हैसियत से दर्शक-दीर्घा में खड़े होने दिया गया**

लुइज़े ऑटो-पीटर्स — “स्वतंत्र पुरुषों को परतंत्रता से घिरे रहना मंज़ूर नहीं होना चाहिए”

क्रांति हारी, पर बेकार नहीं गई

1848 **“रूढ़िवादी ताक़तें उदारवादी आंदोलनों को दबा पाने में कामयाब हुईं, किंतु वे पुरानी व्यवस्था बहाल नहीं कर पाईं।”** इसके बाद **हैब्सबर्ग क्षेत्रों और रूस में भूदासत्व और बंधुआ मज़दूरी समाप्त** कर दी गई

राजाओं को समझ आ गया कि **रियायतें देकर ही क्रांति और दमन का चक्र समाप्त किया जा सकता है**

8

जर्मनी और इटली का निर्माण

अब सेना और कूटनीति का दौर

जर्मनी का एकीकरण

1 **1848**
मध्यवर्गीय जर्मनों ने**निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र-राज्य** बनाना चाहा

2 —
यह उदारवादी पहल राजशाही और फ़ौज ने मिलकर दबा दी; **जुंकरों** ने भी उनका साथ दिया

3 —
इसके बाद**प्रशा ने एकीकरण का नेतृत्व सँभाला**

4 —
ऑटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का जनक; उसने **प्रशा की सेना और नौकरशाही** की मदद ली

5 **सात वर्ष**
ऑस्ट्रिया, डेन्मार्क और फ़्रांस से तीन युद्धों में प्रशा को जीत

6 **18 जनवरी 1871**
वर्साय के शीशमहल में विलियम प्रथम जर्मनी का सम्राट घोषित

1848 में जनता ने संसद से राष्ट्र बनाना चाहा और असफल रही — **1871 में सेना ने बना दिया**

पृष्ठ 20–22

इटली के एकीकरण की तीन कड़ियाँ

व्यक्ति	भूमिका
ज्युसेपे मेत्सिनी	**विचार दिया** — 1830 के दशक में एकीकृत गणराज्य का कार्यक्रम; **‘यंग इटली’**
काउंट कावूर	**कूटनीति की** — फ़्रांस से संधि, जिससे **1859 में ऑस्ट्रिया हारा**
ज्युसेपे गैरीबॉल्डी	**लड़ाई लड़ी** — **1860 में ‘हज़ार लोगों का अभियान’**; **‘रेड शर्ट्स’** की संख्या **30,000** तक पहुँची

1861 में विक्टर इमेनुएल द्वितीय एकीकृत इटली का राजा घोषित हुआ

एक चौंकाने वाला सच

दक्षिणी इटली में जिन आम किसानों ने गैरीबॉल्डी को समर्थन दिया था, **उन्होंने इटालिया के बारे में कभी सुना ही नहीं था** और वे मानते थे कि **ला टालिया विक्टर इमेनुएल की पत्नी थी।**

पाठ्यपुस्तक, पृष्ठ 21

‘राष्ट्र’ का विचार पहले पढ़े-लिखे वर्ग तक ही सीमित था और आम लोगों तक धीरे-धीरे पहुँचा

ब्रिटेन की अजीब दास्तान

- **ब्रिटेन में राष्ट्र-राज्य का निर्माण किसी क्रांति का परिणाम नहीं था** — यह **एक लंबी प्रक्रिया** थी
- **अठारहवीं सदी के पहले ब्रितानी राष्ट्र था ही नहीं**
- अंग्रेज़, वेल्श, स्कॉट और आयरिश की मुख्य पहचान **नृजातीय** थी
- **1688** में आंग्ल संसद ने **राजतंत्र से ताक़त छीन ली**
- **1707 के ऐक्ट ऑफ़ यूनियन** से **'यूनाइटेड किंगडम ऑफ़ ग्रेट ब्रिटेन'** बना
- **स्कॉटिश हाइलैंड्स के लोगों को गेलिक भाषा बोलने या राष्ट्रीय पोशाक पहनने की मनाही** थी
- **1801 में आयरलैंड को बलपूर्वक यूनाइटेड किंगडम में शामिल** कर लिया गया

यहाँ राष्ट्र **जनता की क्रांति से नहीं, एक राष्ट्र के दूसरों पर प्रभुत्व से** बना

9

राष्ट्र की दृश्य-कल्पना

राष्ट्र को चेहरा कैसे दें?

राजा का चित्र बन सकता है — पर ‘देश’ का चित्र कैसे बनेगा?

अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के कलाकारों ने राष्ट्र का **मानवीकरण** करके यह समस्या हल की

मारीआन और जर्मेनिया

मारीआन — फ़्रांस

- **लोकप्रिय ईसाई नाम**, जिसने **जन-राष्ट्र के विचार** को रेखांकित किया
- चिह्न — **लाल टोपी, तिरंगा और कलगी**
- ये **स्वतंत्रता और गणतंत्र** के प्रतीक हैं
- प्रतिमाएँ **सार्वजनिक चौकों** पर; छवि **सिक्कों और डाक टिकटों** पर

जर्मेनिया — जर्मनी

- **जर्मन राष्ट्र का रूपक**
- सिर पर **बलूत पत्तियों का मुकुट**
- क्योंकि **जर्मन बलूत वीरता का प्रतीक** है
- चित्रकार — **फ़िलिप वेट (1848)** और **लॉरेन्ज़ क्लासेन (1860)**

रूपक = जब किसी **अमूर्त विचार** को किसी **व्यक्ति या चीज़** के ज़रिए इंगित किया जाए

बॉक्स 3 — यह तालिका सीधे परीक्षा में आती है

जर्मेनिया के प्रतीकों के अर्थ

प्रतीक	अर्थ
टूटी हुई बेड़ियाँ	आज़ादी मिलना
बाज़-छाप कवच	जर्मन साम्राज्य की प्रतीक-शक्ति
बलूत पत्तियों का मुकुट	बहादुरी
तलवार	मुक़ाबले की तैयारी
तलवार पर लिपटी जैतून की डाली	शांति की चाह
काला, लाल और सुनहरा तिरंगा	1848 के उदारवादी-राष्ट्रवादियों का झंडा
उगते सूर्य की किरणें	एक नए युग का सूत्रपात

10

राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद

जब विचार का चेहरा बदल गया

राष्ट्रवाद का बदला हुआ चेहरा

- उन्नीसवीं सदी की अंतिम चौथाई तक राष्ट्रवाद का वह आदर्शवादी उदारवादी-जनतांत्रिक स्वभाव नहीं रहा
- अब राष्ट्रवाद सीमित लक्ष्यों वाला संकीर्ण सिद्धांत बन गया
- राष्ट्रवादी समूह एक-दूसरे के प्रति अनुदार होते चले गए और लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहते थे
- प्रमुख यूरोपीय शक्तियों ने अपने साम्राज्यवादी उद्देश्यों के लिए अधीन लोगों की राष्ट्रवादी आकांक्षाओं का इस्तेमाल किया

पहले वह कहता था **“हम आज़ाद होना चाहते हैं”** — अब कहने लगा **“हम दूसरों से बड़े हैं”**

बाल्कन क्षेत्र में तनाव क्यों पनपा

- क्षेत्र में **गहरी भौगोलिक और जातीय भिन्नता** थी; निवासी **स्लाव** कहलाते थे
- **बाल्कन का बड़ा हिस्सा ऑटोमन साम्राज्य के नियंत्रण में** था
- **रूमानी राष्ट्रवाद के फैलने और ऑटोमन साम्राज्य के विघटन से स्थिति विस्फोटक** हो गई
- अधीन राष्ट्रीयताएँ एक के बाद एक **स्वतंत्रता की घोषणा** करने लगीं
- **बाल्कन राज्य एक-दूसरे से भारी ईर्ष्या करते थे** और हर एक ज़्यादा इलाक़ा चाहता था
- **रूस, जर्मनी, इंग्लैंड और ऑस्ट्रो-हंगरी** — हर ताक़त वहाँ **अपना प्रभाव बढ़ाना** चाहती थी

“इससे इस इलाक़े में कई युद्ध हुए और अंततः प्रथम विश्व युद्ध हुआ”

अध्याय का अंतिम संदेश

राष्ट्रवाद के यूरोपीय विचार कहीं और नहीं दोहराए गए, क्योंकि **हर जगह लोगों ने अपनी तरह का विशिष्ट राष्ट्रवाद विकसित किया।**

पाठ्यपुस्तक, पृष्ठ 27

यही विचार आगे चलकर **भारत** पहुँचा और **साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ हथियार** बना — वही अगले अध्याय का विषय है

चार तारीख़ें — बस इतना पक्का कर लीजिए

4

1789 क्रांति · **1815** वापसी · **1848** विस्फोट · **1871** एकीकरण

बाक़ी सब तारीख़ें इन्हीं के आगे-पीछे बैठ जाएँगी

मरुशाला की कहानी

दो शिक्षक, एक मरुशाला



भरत चौधरी

व्याख्याता

रा.उ.मा.वि. जेठन्तरी · ब्लॉक समदड़ी, जिला बालोतरा



वनिता कुमारी

व्याख्याता

रा.उ.मा.वि. रामसीन मूंगड़ा · ब्लॉक एवं जिला बालोतरा

फ़ोन के कैमरे से स्कैन कीजिए

यह स्लाइड शो ऑनलाइन

marushala.com/teach/slides/class-10/history/europe-mein-rashtravad-ka-uday

विद्यार्थियों के लिए रिवीजन नोट्स

marushala.com/notes/class-10/history/revision-notes/europe-mein-rashtravad-ka-uday

MARUSHALA **marushala.com** निःशुल्क · बिना लॉगिन · हिन्दी और अंग्रेज़ी